[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3660

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

चित्रकला में रंग (अजन्ता)

दिलीप कुमार (अस्सिटेन्ट प्रोफेसर)
(ललित कला विभाग), बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
Email: Art.Dilipk@gmail.com

अंजन्ता की गुफाओं मे भिति चित्रण 200 ई0 पू0 से लेकर 620 ई0 तक के समय तक बनायी गयी है इतने लम्बे समय अन्तराल के बाद कुछ भिति चित्रों के वर्ण सौष्ठव तथा लवण्य कम हुये है फिर भी आज तक अजन्ता के चित्रों की आभा फीकी नही पडी है। अजन्ता के चित्रों में सुन्दर वर्ण छटा यत्र–तत्र विखरी दिखाई पडती है। यद्यपि इन चित्रों की चमक पर्याप्त धूमिल पड चुकी है तथापि रंग जानदार प्रतीत होते है। चमकदार नीचे, हरे तथा बैगनी रंग अपनी पूर्व आभा में आज भी जगमगाते है। शरीर तथा कपडों का रंग लावण्य युक्त और संगत हैं अजन्ता के कुछ आरम्भिक चित्रों को छोडकर सोलहवीं तथा सत्रहवी गुफा में अजन्ता के चित्रकारों ने गहरी पृष्ठ भूमि पर हल्के वर्ण विधान में आकृतिया बनाने की प्रवृति दिखाई है, परन्तु दूसरी ओर हल्की पृष्ठ भूमि पर गहरी आकृतियों के बनाने के प्रवृति भी दिखाई पडती है जो यूरोप की वेनिस–चित्रकला शैली के समान है। चित्रकार दर्शक के ध्यान को चित्र की ओर आकृष्ट करने के लिये बहुत जागरूक रहा, इस कारण उसने मानवाकृतियों के बालों में काले रंग का प्रयोग किया है, जिससे रूप और लावण्य की वृद्धि हुई है और इच्छित प्रभाव उत्पन्न हो गया है।

अजन्ता के चित्रकार की वर्ण विधान सम्बन्धी कुशलता का एक उदाहरण सत्रहवी गुफा के एक चित्र **"महाहंस जातक"** में देखा जा सकता है। यह चित्र अपने वर्ण विधान के कारण बहुत विख्यात हो चुका है और रंग की योजना के आधार पर इसकों अजन्ता का सर्वश्रेष्ठ चित्र माना जाता है। इस चित्र में कलाकार ने पूर्णतः स्वतंत्र रूप से रंगों का चयन किया है। इस चित्र मे राजा एक ऊँचे सिंहासन पर बैठा है और चारों ओर अनुचर खडे है। इसमें से एक अनुचर राजसी छत्र तथा दूसरा चैवर धारण किये है और तीसरा अपने रंग के कारण हब्शी जैसा प्रतीत हो रहा है। यह हब्शी राजा के नीचे पैरो पर बैठा है। उसका वर्ण गहरा लाल है, जो निश्चित रूप से राजसी बहेलिया है, पीछे आलेखनों से सुसाज्जित कनात खडी है। चित्र की अग्रभूमि में एक तालाब है जिसमें कमलपुष्प है तथा जल के पक्षी जल–बिहार कर रहें है। इस चित्र में श्वेत रंग के शीतल प्रयोग से चित्रकार ने चित्र को एक उत्तम संतुलन प्रदान किया है। इस चित्र में विभिन्न आकृतियों के शरीर में गुलाबी, भूरा, गहरा लाल तथा टेरावर्ट (गहरा गंदा हरा) रंग लगाया गया है। इस चित्र में गहरी पृष्ठभूमि पर, जो लगभग काली है, हल्के रंग की आकृतियॉ बनायी गई है। इस गहरे रंग की पृष्ठभूमि पर विभिन्न बलों और रंगों में विभिन्न वस्तुऍ बनायी गई है। जिसमें चित्र में कठोरता नही आने पाई है। चित्र के निचले भाग में संगत हरे रंगों का सफेद और लाल रंगो के साथ प्रयोग है। इस चित्र में अजन्ता के कलाकार ने नाटकीयता के प्रभाव को भी रोचक वर्ण–विधान के द्वारा प्रदर्शित किया है। कपडो, आभूषणो तथा अन्य साज–सज्जा में उपयुक्त तथा रोचक वर्ण विधान है।

भिति चित्रण में गिने चुने प्राकृतिक खनिज रंगों का प्रयोग ही होता है ताकि वे चूने के क्षारिय प्रभाव से सुरक्षित रह सकें, इस शैली के चित्रों में जिन रंगो का स्वतंत्रता से प्रयोग किया गया, उनमें सफेद, लाल, भूरे से बने विभिन्न हल्के तथा गहरे रंग है। स्थानीय हरे रंग का प्रयोग किया गया है जो कुछ गंदा रंग है।

अजन्ता तथा बाद्य में विशेष रूप से नीले रंग का प्रयोग है। सफेद रंग प्रायः अपारदर्शी है और उसकों चूने या खडिया से बनाया गया है, लाल तथा भूरे लौह (अयस्क) से प्राप्त खनिज रंग है। हरा रंग एक स्थानीय अयस्क (खनिज) से बनाया गया है जो टेरावर्ट है। नीला रंग फारस से आयात किये हुए लेपिसलाजुली एक बहुमूल्य पत्थर को घिसकर बनाया गया है। शेष रंगो में पीला (रामरज), गहरा लाल (हिरौंज तथा गेरूआ खनिज) स्थानीय है। चमकदार पीले रंग के प्रयोग के लिए अनुमानतः प्राकृतिक रूप सं संखिया से उपलब्ध पीले रंग का प्रयोग है। रंगों कों चावल के मौड तथा वज्रलेप (सरेस) में मिलाया जाता था।

संदर्भ ग्रंथ

1 *भारतीय चित्रकला का इतिहास*
2 *डॉ0 अविनश बहादुर वर्मा,*
3 *अनिल वर्मा, संगीता वर्मा*